निस्केयर
NISCAIR

अक्तूबर 2013

सम्पादक

प्रदीप शर्मा

सह सम्पादक

डा. बालक राम

प्रोडक्शन अधिकारी

सुप्रिया गुप्ता

एस. पी. सिंह

कला अधिकारी

नीरू विजन

योगेश कुमार आनंद

कम्पोजिंग

मीरा देवी

वरिष्ठ बिक्री एवं विज्ञापन अधिकारी

परवेज़ अली खान

वरिष्ठ बिक्री एवं वितरण अधिकारी

लोकेश कुमार चोपड़ा

अक्तूबर 2013
विज्ञान प्रगति

आपदा और विपदा न रोक पाया खुदा

कोई भी आपदा आवश्यक सेवाओं जैसे : स्वास्थ्य सुरक्षा, विद्युत, जल, सीवेज/कूड़ा हटाना, परिवहन तथा संचार को बाधित कर देती है। इन बाधाओं से स्थानीय समुदायों तथा विभिन्न देशों के लोगों के स्वास्थ्य के साथ-साथ सामाजिक तथा आर्थिक नेटवर्क पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। इन आपदाओं से आम जनों के जीवन पर दूरगामी प्रभाव पड़ते हैं। गलत तरीके से प्लान किए गए राहत कार्यों का न केवल आपदा प्रभावित लोगों पर सार्थक रूप से नकारात्मक प्रभाव पड़ता है बल्कि दानकर्त्ता व राहत एजेन्सियाँ भी प्रभावित होती हैं। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि व्यक्तिगत रूप से प्रयास करने की बजाय स्थापित कार्यक्रमों के साथ जुड़ा जाए। आपदा से प्रभावित क्षेत्रों में वहाँ के लोगों की सहायता के लिए स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों को मदद के लिए आगे आना होता है। सभी को अपना एक आपदा प्रबन्धन प्लान तैयार करना होता है। इन योजनाओं में बचाव, तैयारी, राहत तथा रिकवरी शामिल होते हैं।

आपदा निवारण के अंतर्गत ऐसी गतिविधियाँ तैयार की जाती हैं जो कि आपदा से स्थायी सुरक्षा प्रदान करें। सभी आपदाओं से नहीं, विशेषकर प्राकृतिक आपदाओं से बचा जा सकता है। जीवन की क्षति तथा घायलों के खतरे की सही योजना, पर्यावरणीय योजना तथा डिजाइन मानक बनाकर कार्य किया जा सकता है। जनवरी 2005 में विश्व स्तर पर 168 सरकारों ने प्राकृतिक आपदा जोखिम कम करने के लिए एक 10 वर्षीय ग्लोबल प्लान (जिसे *द ह्योगो फ्रेमवर्क* कहा गया) को अपनाया। इस योजना में आपदा स्थिति - के मद्देनज़र व्यावहारिक संसाधनों के बारे में ज्ञान दिया जाता है। आपदा से निपटने के लिए तैयारी इस प्रकार की जाए कि मानव क्षति तथा अन्य नुकसान कम से कम हों। उदाहरण के लिए दुर्गम इलाकों से जान व माल को हटाना तथा समय रहते हुए प्रभावी बचाव, राहत तथा पुनर्वास की व्यवस्था करना। आपदा के प्रभाव को कम करने का मुख्य रास्ता उसकी तैयारी है। आपदा तथा इसके दीर्घकालीन परिणामों के प्रभाव को कम करने के लिए आपदा राहत एक समन्वित मल्टी एजेन्सी प्रत्युत्तर है। आपदा राहत के कार्यों में सम्मिलित हैं : बचाव, पुनःअवस्थित करना, खाद्य एवं पानी प्रदान करना, रोगों तथा विकलांगता से बचाव, जन सुविधाओं (जैसे संचार तथा परिवहन) को सुचारू करना, अस्थायी शेल्टर तथा आकस्मिक स्वास्थ्य सुरक्षा प्रदान करना।

जब आपातकालीन तथा प्रारंभिक समस्याएं दूर हो जाएं तब भी प्रभावित लोगों की सहायता करने वाले समुदाय अपना कार्य जारी रखें। प्राकृतिक आपदाओं में बाढ़, तूफान, भूकंप तथा ज्वालामुखी उद्भेदन आते हैं जो कि मानव स्वास्थ्य पर सीधा प्रभाव डालते हैं। तदोपरान्त अनेक मामलों में मृत्यु भी हो जाती है। बाढ़ से भू-स्खलन, भूकंप से आग, सुनामी से बाढ़ तथा बवंडर से जहाजों का डूबना जैसी समस्याएं पैदा होती हैं। पर्यावरण संकट में प्रौद्योगिकीय या औद्योगिक दुर्घटनाएं आती हैं जिनके अन्तर्गत सामान्यतः संकटकारी पदार्थ आते हैं। यह संकट वहाँ पैदा होता है जहां इन पदार्थों का उत्पादन होता है या इनका उपयोग किया जाता है या इन्हें ढोया जाता है। इसमें सामान्यतः बड़े वनों में लगी आग शामिल हैं क्योंकि यह संकट मानव जनित है। जटिल संकटों में प्राधिकरण को ध्वस्त करना, सामरिक महत्व के प्रतिष्ठानों की लूट या उन पर आक्रमण सम्मिलित हैं। जटिल संकटों में युद्ध की स्थितियाँ या युद्ध भी शामिल हैं। सार्वभौमिक आपदाओं में अचानक संक्रामक रोग का फैलना आता है जो स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। इसके अलावा यह सेवाओं तथा व्यापार में भी तबाही मचाता है। इससे आर्थिक तथा सामाजिक समस्याएं उत्पन्न होती हैं।

आपदा प्रबन्धन आपदाओं के प्रभाव को कम करने के लिए आपातकाल के सभी मानवता संबंधी पहलुओं विशेषकर सभी तैयारियों, प्रत्युत्तर तथा प्राप्ति के लिए संसाधनों तथा जिम्मेदारियों का व्यवस्थापन एवं प्रबन्धन है।

मूल्य

एक अंक : 30.00 रुपये
एक वर्ष : 300.00 रुपये
दो वर्ष : 570.00 रुपये
तीन वर्ष : 810.00 रुपये
विदेशी वार्षिक सदस्यता : 90$

शिकायत : 25841647
ई-मेल : lkc@niscair.res.in

सम्पादकीय : 25846301, 04-07/370; 25841769
प्रोडक्शन : 25847353, 25846301, 04-07/217, 284
विज्ञापन : 25845359, बिक्री : 25841647, 25846301, 04-07/335, 295 फैक्स : 25847062
ई-मेल : vp@niscair.res.in
वेब साइट : http:/www.niscair.res.in

© राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान
लेखकों के कथनों और मतों के लिये सी एस आई आर - राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान, डॉ. के. एस. कृष्णन् मार्ग, नई दिल्ली - 110 012 उत्तरदायी नहीं है। पत्रिका से संबंधित सभी विवाद दिल्ली न्यायालय द्वारा ही निपटाये जायेंगे।